‘नाट्य द्वारा शिक्षा (Theatre in Education)’ है क्या?

विजय सेवक*

नाट्य द्वारा शिक्षा का अर्थ सिर्फ़ पाठ्यक्रम आधारित एकल अभिनय या लघुनाटक या एकांकी या दीर्घनाटक तैयार करना व उसकी चर्चा करना नहीं है। ना तो वह सिर्फ़ प्रयुक्ति है। यह सब तो उसका एक हिस्सा मात्र है। नाट्य द्वारा शिक्षा व्यापक संकल्पना है। वह तो जीवन जीने की फ़िलॉसफ़ी है। उसका ध्येय मानव निर्माण है जिसकी शुरुआत स्व से होती है और समष्टि तक फैलती है। नाट्य द्वारा शिक्षा के कई आयाम हैं। वह एक ‘अम्ब्रेला टर्म’ (Umbrella Term) है। नाट्य द्वारा शिक्षा विनियोगात्मक कला (Applied Art) है।

आप कक्षा में प्रवेश करते हैं। आपने अपने हाथ पीछे छुपाए हुए हैं। बच्चे वे देख नहीं सकते। आप बच्चों से पूछते हैं — “मैं आप के लिए कुछ लाया हूँ। कौन बताएगा मेरे हाथ में क्या है?” बच्चे सोचेंगे, अनुमान करेंगे और तरह-तरह के जवाब देंगे।

बाद में आप हाथ बच्चों के सामने लायेंगे और कहेंगे — “हवा। आपके लिए मैं हवा लाया हूँ।”

सारे बच्चे हंसेंगे और आश्चर्यचकित होंगे। कुछ बच्चे ‘खोदा पहाड़, निकला चूहा’ की तरह ‘ओह!’ करेंगे।

आप उन्हें एक जोडकणा (rhyme) सुनाएँगे और बच्चों से भी पुनरावर्तित करायेंगे —

इधर हवा, उधर हवा;
सब जगह है हवा ही हवा।
ऊपर हवा, नीचे हवा,
दाएँ हवा, बाएँ हवा;
जहाँ भी ढूँढ़ो,
हवा ही हवा (३)

“अच्छा, मुझे हवा के अलग-अलग नाम बताएँ।”

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* वी. टी. चोकसी, सार्वजनिक कोलिज ऑफ़ एजूकेशन, लाल बंगला, अठवा लाइंस सूरत 395007.

कुछ एक बच्चे बताएँगे — वायु, पवन, एयर, ब्रीज़, समीर वगैरह वगैरह।

"अच्छा, अब सब आँखें बंद कीजिए। दीर्घ श्वास लीजिए। धीरे से उच्छ्वास निकालिए। ऐसा तीन बार कीजिए।

श्वास लेते रहिए और निकालते रहिए। मान लो कि आप मैदान में हैं और हवा बह रही है। हवा आपके शरीर को स्पर्श कर रही है। आप अनुभव करो कि हवा आपके शरीर को स्पर्श कर रही है। अब मान लीजिए कि आप खुद हवा हैं और आप बह रहे हैं। बहो हवा की तरह बहो बहो सब जगह बहो। आप हवा हैं, हवा हवा।

अब दीर्घ श्वास लीजिए। धीरे से उच्छ्वास निकालिए। ऐसा तीन बार कीजिए। अब दोनों हाथ की हथेलियों को इकट्ठा करके दो-तीन बार घिसें और हथेलियों को अपनी आँखों पर रखें। धीरे से अपनी आँखों को खोलिए। अपने हाथ आँखों से हटाएँ।

"कैसा लगता है?" आप तीन-चार बच्चों को पूछेंगे — "आपको कैसा लगा? आप कौन-से मैदान में थे? मैदान में कहाँ थे? हवा कैसे बह रही थी? आपको हवा का स्पर्श कहाँ हुआ — यानी कि शरीर के कौन-से अंगों पर हुआ? आपको कैसा लगा? जब हवा आपको छुआ तो आपको कैसा अनुभव हुआ? आपने कुछ प्रतिक्रिया दी? कैसी?

अच्छा, आप जब हवा बने तो कहाँ-कहाँ गये? कहाँ घूमे? क्यों? हवा बनने का मज़ा आया?"

तो वह आपकी सोच थी। अब ज़रा खड़े हो जाइए।

अब हम सब चलेंगे हवा की तरह। जैसे आप अपनी सोच में चले थे ऐसे चलेंगे। एक-दूसरे से टकरायेंगे नहीं। और हाँ, मैं जब 'स्टॉप' कहूँ तो उसी मुद्रा में रुक जाना है; फिर 'वॉक' कहूँ तो फिर से चलना है। ठीक है?

तो वॉक

स्टॉप।"

हाँ, स्टॉप। शुरू से लेकर अब तक आपने जो पढ़ा वह नाट्य द्वारा शिक्षा का एक छोटा-सा उदाहरण है। उस उदाहरण को पाँच-छह बच्चों के समूह बनाकर अलग-अलग प्रकार के नाट्य-मनोयत्न (Theatre Exercise) देकर 'हवा' विषय पर कहानी लिखवाकर, चित्र बनवाकर, और उस पर आशूनाट्य (Improvisation) करवाकर आगे ले जाया जा सकता है।

अलग-अलग समूह में 'वाह, हवा वाह!', 'हवा न हो तो!', 'हवा की ज़रूरत', 'बिगड़ी हवा/बदबू', 'हम सुधरें, हवा सुधरें' जैसे विषय-वस्तु पर लघु नाटकों (7 से 10 मिनट) की रचना करवाई जा सकती है।

शर्त यह कि —

- बच्चों को खुद काम करने दें।
- विचार करने दें, कल्पना करने दें।
- समूह में काम करने दें। चर्चा करके खुद निर्णय लेने दें।
- सर्जनात्मक कार्य करने दें।
- कुछ थोपें नहीं। फेसिलिटेटर (Facilitator) बनें।
- आपको सब कुछ सिखाना नहीं है, बच्चे खुद सीखें ऐसी परिस्थितियों की रचना करनी है।

बच्चों को खुलने का और उड़ने का मौका देना है।

- माहिती (Information) ज्ञान (Knowledge) में परिवर्तित हो ऐसी प्रवृत्ति/याँ करनी है/हैं।

यह सब बातें बहुत ही ज़रूरी हैं। इनके बिना अध्येताकेन्द्री अध्ययन सिद्ध नहीं होगा।

अब ज़रा ऊपर दिए गए उदाहरण द्वारा 'नाट्य द्वारा अध्ययन' की बातें करें।

1. जरा 'नाट्य द्वारा अध्ययन' की प्रक्रिया के बारे में सोचिए —

   मैं नाटक की परिभाषा का उपयोग करूँ तो,

- कक्षा में प्रवेश और प्रश्न प्रारंभ जिसमें नाट्यतत्त्व मौजूद है, कुतूहल है, रहस्य है, हास्य भी है।
- हवा पर गीत, रमत, कल्पनाविहार और नाट्य मनोयत्न विकास है।
- कहानी और चित्र बनाना द्वंद्व (समस्या) है।
- विषय-वस्तु पर लघुनाटक चरमसीमा, और
- लघुनाटक का प्रदर्शन व उस पर आंतरव्यवहार निरसन (समस्या समाधान) है।

2. हवा पर गीत लयनिर्माण मनोयत्न है। नाट्य द्वारा अध्ययन प्रक्रिया में लयनिर्माण का बहुत महत्त्व है। अध्येता के भाषा विकास में लयनिर्माण का महत्वपूर्ण योगदान है। यह नाट्यविद्या में वाचिकम (वाक् कौशल्य) है।
3. नाट्यरमत व नाट्यमनोयत्न मनोशारीरिक प्रक्रिया है, आन्गिकम (अंग-शारीरिक कौशल्य) है।
4. किसी भी सामग्री के उपयोग का मनोयत्न (Exercise) (जैसे पतंग/धजा बनाना या साबुन के पानी से गुब्बारे उड़ाना) आहार्य (दृश्यबंध व वस्तु) है।
5. श्वास-उच्छ्वास या सेमी-ट्रांस की क्रिया के बाद विचार (Thinking) व कल्पनाविहार (Imagining) सात्विक (भाव अभिव्यक्ति) है। यह अति आवश्यक है, साथ में नाजुक (delicate) भी है। तजज्ञता (Expertise) के बिना इसे नहीं करना चाहिए। यह मनोशारीरिक (Psycho-Physical/ Kinaesthetic) यत्न करवाते वक्त भाषा प्रयोग व उसकी अदायगी का सोच-विचारपूर्ण होना अति आवश्यक है। (यह सब अभिनय के तत्त्व हैं।)
6. नाट्य द्वारा अध्ययन की प्रक्रिया मुक्त होने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के दौरान मुक्त वातावरण ज़रूरी है। इसके बिना नाट्य द्वारा अध्ययन की प्रक्रिया स्वाभाविक (Natural) नहीं हो पाती।
7. नाट्य द्वारा अध्ययन की प्रक्रिया में अध्येता हँसते-खेलते सीखता है।
8. नाट्य द्वारा अध्ययन की प्रक्रिया अनुभवजन्य अध्ययन (Experiential Learning) है। अध्येता अनुभूति व अनुभव से सीखता है।
9. नाट्य द्वारा अध्ययन की प्रक्रिया रचनात्मक (Productive) व सर्जनात्मक (Creative) अध्ययन है।
10. नाट्य द्वारा अध्ययन की प्रक्रिया के दौरान अध्येता में जो अंदर है वही बाहर आता है यानी कि आंतरिक तत्त्व अभिव्यक्ति पाते हैं।

यह सब बातें अध्ययन से उसकी प्रक्रिया से जुड़ी हुई हैं। ज़रा नाट्य द्वारा शिक्षा की भी बात कर लें।

नाट्य द्वारा शिक्षा का अर्थ सिर्फ़ पाठ्यक्रम आधारित एकल अभिनय (Mono-acting) या लघुनाटक या एकांकी या दीर्घनाटक तैयार करना व उसकी चर्चा करना नहीं है। न तो वह सिर्फ़ प्रयुक्ति (Technique) है। यह सब तो उसका एक हिस्सा मात्र है। नाट्य द्वारा शिक्षा व्यापक संकल्पना (Concept) है। वह तो जीवन जीने की फ़िलॉसफ़ी है। उसका ध्येय मानव निर्माण है जिसकी शुरुआत स्व से होती है और समष्टि तक फैलती है। नाट्य द्वारा शिक्षा के कई आयाम हैं। वह एक 'अम्ब्रेला टर्म' (Umbrella Term) है जिससे अध्येता, अध्यापक, अभिभावक और समाज के सभी सभ्य जुड़े हुए हैं, सभी विषय व कलाएँ जुड़ी हुई हैं; और तो और, नाट्य के कई स्वरूप व प्रक्रिया भी इनमें शामिल हैं। यह अध्यापक पर आधारित हैं कि वह नाट्य का कैसे, कहाँ, कब और क्यों प्रयोग करता है।

दूसरी बात यह कि नाट्य द्वारा शिक्षा विनियोगात्मक कला (Applied Art) है। कला का विनियोग जीवन में, जीवन जीने में करना है। नाट्य द्वारा अध्ययन प्रक्रिया की परिकल्पना (Design) बनाते वक्त खास करके कहानी या आशूनाट्य (Improvisation) व अंतरव्यवहार (Interaction) के आयोजन में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि नाट्य के तत्वों (Elements) व प्रविधि (Techniques) का कैसे प्रयोग करना है, नाट्य को या नाट्यप्रविधि को अन्य स्वरूप (Forms) व प्रविधियों से कैसे जोड़ना है। यह विनियोग के लिए अध्यापक की कला व अध्यापन सर्जनशीलता अत्यंत आवश्यक है। अध्यापक ध्यानपूर्वक Blended Learning करवाएँ यह ज़रूरी है।

तीसरी बात, नाट्य द्वारा शिक्षा का हेतु नाट्यविद्या पढ़ाना या कलाकारों को तैयार करना नहीं है। उसका उद्देश्य बेहतर ढंग से जीना है। जीवन कौशल्य है। स्व से समष्टि विकास है। सामंजस्य है, सहकार है। समझदार समाज (Responsive Society) है, Sane Society है। इसीलिए इसमें नाट्य प्रदर्शन (Product) से ज़्यादा महत्त्व प्रक्रिया (Process) का है। प्रक्रिया आदत बने और व्यापक स्वरूप धारण करें, कक्षा से बाहर निकलकर समाज तक पहुँचे ऐसे प्रयत्न ज़रूरी हैं। समाज की साझेदारी ज़रूरी है। कला के ज़रिये शिक्षा को सामाजिक सार्थकता प्रदान करना ज़रूरी है। कई बार यह देखने में आया है कि यह विषय पर या तो नाट्यकला हावी हो जाती है या सामाजिक नारेबाजी। अध्यापक को ध्यान रहे कि नाट्य द्वारा शिक्षा का हेतु विचारशील समाज का निर्माण करना है, घिसे-पीटे विषय-वस्तु व थोथे नारों का पुनरावर्तन नहीं है।

कई बार यह भी देखा गया है कि शाला-महाशालाओं में नाट्यकला कुछ एक त्यौहार व वार्षिक कार्यक्रमों तक सीमित हो जाती है, स्पर्धा या इवेंट बन जाती है। नाट्य द्वारा शिक्षा की संकल्पना इतनी सीमित नहीं है। उसे उचित

महत्त्व मिलना ज़रूरी है। यह प्रक्रिया समझदारी से और नियमित रूप से करना ज़रूरी है। एकाध-दो शिविर में जाकर कुछ एक प्रविधियाँ जान लेने से नाट्य द्वारा शिक्षा सिद्ध नहीं होती है, उसे व्यापक रूप में समझकर अपनाना चाहिए। यह विषय शिक्षा और नाट्य दोनों के दर्शनशास्त्र से जुड़ा हुआ है। अध्यापक की दोनों क्षेत्रों में रस-रुचि-रुझान ज़रूरी है। उसका चार-पाँच साल अभ्यास करना ज़रूरी है, उस पर काम करना ज़रूरी है; तभी उसकी फ़िलॉसफ़ी व संकल्पना समझ में आती है। नाट्य द्वारा शिक्षा समय की माँग करती है। और हाँ, नाट्य द्वारा शिक्षा कार्यक्रम में जो अपनी मर्ज़ी से जुड़ना चाहे उसे ही जोड़ना चाहिए। उसे किसी पर भी थोपना नहीं चाहिए। क्योंकि नाट्य द्वारा शिक्षा हवा बनकर लहराने की प्रक्रिया है — Indoctrination नहीं है, Self-learning, Experiential Learning हैं — खुद जीकर सीखने की प्रक्रिया है।।